Orchid

OSR SERIES

धरा

हिंदी व्याकरण

उत्तर पुस्तिका 6

Orchid Publications (P) Ltd.

पाठ 1 भाषा, लिपि, बोली और व्याकरण

(1) (क) हिंदी (ख) 14 सितंबर 1949 (ग) गुरुमुखी (घ) हिंदी, संस्कृत

(2) (क) गलत (ख) सही (ग) गलत (घ) सही (ड) गलत (च) सही (छ) गलत

(3) (क) गुजराती (ख) असमिया (ग) हिंदी (घ) बंगाली (ड़) तमिल (च) मराठी
(छ) कन्नड़ (ज) राजस्थानी

(4) (क) देवनागरी (ख) रोमन (ग) गुरुमुखी (घ) बांग्ला (ड़) देवनागरी (च) फारसी
(छ) देवनागरी (ज) देवनागरी

(5) हिंदी – देवनागरी पंजाबी – गुरूमुखी अंग्रेजी – रोमन
उर्दू – फारसी संस्कृत – देवनागरी बंगाली – बांग्ला

(6) व्याकरण वह शास्त्र है जिसके नियमों के द्वारा हम शुद्व बोलना, लिखना तथा पढ़ना सीखते है। अर्थात व्याकरण भाषा के शुद्व रूप का ज्ञान कराता है। महत्व – व्याकरण का भाषा सीखने में बहुत अधिक महत्व है। बिना व्याकरण के न तो हम अर्थपूर्ण भाषा लिख सकते है और न ही बोल सकते है।

(7) (क) भाषा वह साधन है,जिसके द्वारा हम बोलकर, सुनकर, लिखकर या पढ़कर अपनी बात दूसरो तक पहुँचाते है, और दूसरो की बातो को समझते है।

(ख) किसी भी भाषा की लिखावट या लिखने के ढंग को लिपि कहते है।

(ग) किसी छोटे से क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाला भाषा का अल्पविकसित रूप बोली कहलाता है।

(घ) सविंधान ने 14 सिंतबर 1949 को हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में मन्यता प्रदान की है।

पाठ 2 वर्ण विचार

(1) मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) भाषा की सबसे छोटी ध्वनि को वर्ण कहते है। इसके टुकड़े नही हो सकते है।

(ख) वर्ण दो प्रकार के होते है।

(ग) जब स्वरो का प्रयोग व्यंजनो के साथ मिलकर किया जाता है, तो वे अपने असली रूप में नही लिखे जाते बल्कि वे चिह्न के रूप में व्यंजन से जुड़ जाते है। इन्ही चिह्नो को मात्रा कहते है।

(घ) हिंदी वर्णमाला के अनुस्वार (ं) तथा विसर्ग (:) को ' अ ' के साथ जोड़कर अं और अः के रूप में लिखा जाता है। संस्कृत में इन्हे अयोगवाह कहा जाता है।

(2) सही उत्तर के सामने सही का निशान लगाइए–

(क) वर्णो की माला को। (ग) तीन

(ख) हस्व स्वर से दोगुना समय लगता है। (घ) गर्मी

(3) इनसे बनने वाले संयुक्त वर्ण लिखिए–

(क) क्+ष = क्ष (ग) त्+र = त्र

(घ) ज्+र =

(ख) श्+र = श्र

(4) निमलिखित वर्णो के योग से शब्द बनाइए–

(क) मूली (ख) पुष्पा (ग) पत्ता (घ) श्रमिक

(5) निम्नलिखित शब्दों के उचित वर्ण विच्छेद पर सही का निशान लगाइए–

बाजार ब्+आ+ज्+आ+र्+अ

लिपि ल्+इ+प्+इ

कृपा क्+ऋ+प्+आ

(6) 'र' रंग, रन

‘ र्’ धर्म, शर्म

‘ ्र’ ग्रह, प्रत्येक

‘ ्र’ राष्ट्र , ट्रेन

(7) **(क)** कुत्ता, पत्ता

(ख) ज्योति, ज्वाला

(ग) पत्र, चित्र

(घ) कंगन, संगम

(ड़) शुद्ध, विशुद्ध

(च) पट्टी, खट्टी

(छ) क्षमा, कक्षा

(ज)

(झ) द्वारा,

() चिह्न,

(8)

ए हस्व	ओ दीर्घ
अ हस्व	औ दीर्घ
उ हस्व	ऐ दीर्घ
ऋ हस्व	ऊ दीर्घ

(9)

ह कंठ	ऋ मूर्धा
ए कंठतालवय	ल दंत्य

(10)

अनुस्वार	विसर्ग	अनुनासिक
अंगूर	दुःख	पाँच
रंग	प्रातः	ऊँट
संगम	नमः	आँख

(11) (क) कुत्ता, पत्ता

(ख) पक्का, चक्का

(ग) पट्टी, छुट्टी

(घ) बल्ला, पिल्ला

(ड़) पप्प, पप्पू

(च) मम्मी, ममता

(12) (क) उपवन उ+अ+प्+अ+व्+अ+न्+अ

(ख) आसमान अ्+आ+स्+अ+म्+आ+न्+अ

(ग) पाठशाला प्+आ+ठ्+अ+श्+आ+ल्+आ

(घ) परिवर्तन प्+अ+र्+इ+व+अ्+त+ऋ+न्+अ

(च) त्योहार त्+य्+ओ+ह्+आ+र्+अ

(ड़) सरोवर स्+अ+र्+ओ+व्+अ+र्+अ

(छ) विरासत व्+इ+र्+आ+स्+अ+त्+अ

(13) (क) जिन स्वरो के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है, उन्हे हस्व स्वर कहते है।

(ख) जब दो भिन्न व्यंजन आपस में मिलकर नए रूप में आते है,तो उन्हे संयुक्त व्यंजन कहते है।

(ग) स्वरो का प्रयोग तीन प्रकार से किया जाता है–

(1) हस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर (3) प्लुत स्वर

(14) (क) स्वर :– इन्हे बोलने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता नही ली जाती है। इनकी संख्या 11 होती है।

व्यंजनः– इन्हे बोलने के लिए स्वरो की सहायता ली जाती है। इनकी संख्या 33 होती है।

(ख) अनुस्वार – इनका उच्चारण नाक से होता है। जैसे – कंगन, दंगल

अनुनासिक – इनका उच्चारण नाक व गले से होता है। जैसे – चाँदी

(ग) अंतस्थ व्यंजन – इन व्यंजनो का उच्चारण स्वर और व्यंजन के मध्य होता है। जैसे– य, र, ल, व।

ऊष्म व्यंजन – ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय वायु मुख में टकराकर ऊष्मा पैदा करती है। उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते है। जैसे – श, ष, स, ह।

पाठ 3 संधि

(1) सही और गलत।

(क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही ।

(2) (क) एक+एक (ख) विद्या+आर्थी (ग) सूर्य+उदय (घ) वधू+उत्सव (ड़) मत+ऐक्य

(3) (क) चन्द+उदय (ख) निः+चल (ग) न्याय+आलय (घ) सम्+चय (ड़) मनः+कामना

(4) संधि कीजिए–

(क) संसार (ख) सूर्यास्त (ग) परमात्मा (घ) दिनेश (ड़) भारतेन्दु (च) देवर्षि

(5) (क) दो वर्णो के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते है।

(ख) संधि के तीन भेद होते है–

(1) स्वर संधि – गिरि+ईश = गिरीश, हिम+आलय = हिमालय

(2) व्यंजन संधि – दिक्+अंबर = दिगंबर, जगत+ईश = जगदीश

(3) विसर्ग संधि – निः+चल = निश्चल, दुः+आशा = दुराशा

(6) बालक गायक

बाल+ अक गै+अक

पाठ 4 शब्द विचार

(1) सही और गलत ।

(क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही (ड़) गलत ।

(2) (क) गृह (ख) मुख (ग) सर्प (घ) रात्रि (ड़) सप्त ।

(3)

रूढ़ शब्द	**यौगिक शब्द**	**योगरूढ़**
जूता	नीलकंठ	उपग्रह
पिता	पीतांबर	राष्ट्रपति

(4)

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अंधकार	अंधेरा	दुग्ध	दूध
पंच	पाँच	सूर्य	सूरज
कार्य	काम	कूप	कुआँ

(5)

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
हस्त	हाथ	पत्र	पत्ता
पंच	पाँच	सप्त	सात
सर्प	साँप	मुख	मुँह
सत्य	सच	क्षीर	खीर
घृत	घी	पुष्प	फूल

(6)

अंग्रेजी	**फ़ारसी**	**अरबी**	**तुर्की**
स्टेशन	आसमान	गरीब	चाकू
पेंसिल	मगर	फकीर	कुरता
बटन	ज़मीन	अहसान	कैंची
स्कूल	जहाज	कतल	गलीचा

(7) (क) वर्णो के सार्थक मेल को शब्द कहते है,शब्दो का एक निश्चित अर्थ होता है।

(ख) अर्थ के आधार पर शब्दो के दो भेद होते है–

(ग) सार्थक शब्द – जिन शब्दो का कुछ अर्थ निकलता है,उन्हे सार्थक शब्द कहते है। जैसे – घर, पुस्तक आदि

निरर्थक शब्द – ऐसे शब्द जिनका कोई अर्थ नही निकलता है,उन्हे निरर्थक शब्द कहते है। जैसे – खट, ।

(घ) तत्सम शब्द – जो शब्द संस्कृत भाषा से हिंदी में ज्यों के त्यों बिना किसी परिवर्तन के ले लिए गए है, उन्हे तत्सम शब्द कहते है।

तद्भव शब्द – संस्कृत के जो शब्द कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिंदी में प्रचलित है, उन्हे तद्भव शब्द कहते है।

(8)

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
मयूर	मोर	सूर्य	सूरज
आम्र	आम	मुख	मुँह
ग्राम	गाँव	क्षीर	खीर
दधि	दही	पुष्प	फूल

भाषा खेल

स्वंय कीजिए।

पाठ 5 समास

(1) समस्तपद	**समास विग्रह**	**समास**
(क) रसोईघर	रसोई के लिए घर	तत्पुरूष
(ख) दशानन	दस है आनन जिसके	बहुब्रिहि
(ग) प्रत्येक	एक एक	अव्ययीभाव
(घ) रात दिन	रात और दिन	द्वन्द्व समास
(ड़) नवरात्रि	नव रात्र	दिगु समास
(च) पीतांबर	पीला है जो अबर	कर्मधारय
(छ) सज्जन	सत जन है जो व्यक्ति	कर्मधारय
(ज) आमरण	मृत्यु पर्यत	अव्ययीभाव

(2) सही शब्दो के आगे सही का निशान लगाइए–

(क) कर्म तत्पुरूष (ख) कर्मधारय (ग) दिगु समास (घ) अव्ययीभाव

(3) सामासिक शब्द	**समास**
(क) दशानन	बहुब्रीहि
(ख) रातों–रात	अव्ययीभाव
(ग) घनश्याम	तत्पुरूष
(घ) पंकज	तत्पुरूष
(ड़) कमलनयन	तत्पुरूष

(4) दो या दो से अधिक शब्दो के मेल से नया शब्द बनने की प्रकिया को।

(5) (क) दो या दो से अधिक शब्दो के मेल से नया शब्द बनने की प्रकिया को समास कहते हैं। उदाहरण – देश+ भक्ति = देशभक्ति

(ख) समास के छः भेद होते है–

(1) अव्ययीभाव समास – यथाशक्ति, प्रतिदिन, आजन्म, बेशक

(2) तत्पुरूष समास – रसोईघर, विघालय, देशभक्ति, स्नानघर

(3) कर्मधारय समास – महावीर, महापुरूष, पीतांबर, नीलांबर

(4) दिगु समास त्र – त्रिभुज, नवरात्रि, नवग्रह, चौराहा

(5) द्वन्द्व समास – रात–दिन, राजा– रानी , सीता–राम , दाल–रोटी

(6) बहुब्रीहि समास – दशानन, लम्बोदर, नीलकंठ, त्रिनेत्र

(ग) संधि दो वर्णो का मेल है एवं समास दो शब्दो का मेल है।

(घ) जब हम समस्तपदों के खंड करके उनको फिर से अलग अलग दिखाते है, तो इस प्रकिया को समास विग्रह कहते है।

(6) (1) अव्ययीभाव समास – प्रतिदिन, आजन्म, बेशक

(2) तत्पुरूष समास – विघालय, देशभक्ति, स्नानघर

(3) कर्मधारय समास – महापुरूष, पीतांबर, नीलांबर

(4) दिगु समास – नवरात्रि, नवग्रह, चौराहा

(5) द्वन्द्व समास – राजा– रानी , सीता–राम , दाल–रोटी

(6) बहुब्रीहि समास – लम्बोदर, नीलकंठ, त्रिनेत्र।

पाठ 6 उपसर्ग

(1) मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश शब्दो से पहले लगकर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते है या अर्थ बदल जाते है ,उपसर्ग कहलाते है।

(ख) हिंदी में चार प्रकार के उपसर्गो का प्रयोग किया जाता है।

(2) उपसर्ग मूल शब्द

उद	योग
अभि	नय
अधि	कार
अव	नति

(3) (क) अधि + कार = अधिकार

(ख) अव + गुण = अवगुण

(ग) उत + घाटन = उद्घाटन

(घ) अधि + कार = अधिकार

(ड) सम् + सार = संसार

(4) (क) वि +देश = विदेश

(ख) अव + गुण = अवगुण

(ग) सम् + योग = संयोग

(घ) सु + सर्ग = सुसर्ग

(5) उपसर्ग शब्द

अति	अतिरिक्त, अत्यधिक	वि	विजय, विनाश
अनु	अनुभव, अनुशासन	पर	परदादा, परनाना
अधि	अधिकार, अधिपति	भर	भरपेट, भरपूर
परा	पराजय, परामर्श	कम	कमउम्र, कमखर्च
परि	परिक्रमा, परियोजना	बे	बेलगाम, बेशर्म

पाठ 7 प्रत्यय

(1) मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) जो शब्दांश शब्दो से अंत लगकर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते है ,प्रत्यय कहलाते है।

(ख) प्रत्यय दो प्रकार के होते है– (1) कृत प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय

(2) मूल शब्द प्रत्यय

नौक	आनी
दर्श	ईय
लिखा	आई

(3) (क) आवट – सजावट, लिखावट

(ख) पन – अपनापन, बचपन

(ग) अक – विचारक, चालक

(घ) ईय – भारतीय, राजकीय।

(4)

उपसर्ग	**मूलशब्द**	**प्रत्यय**
ला	परवाह	ई
अप	मान	इत
निर	बल	ता
अति	याचा	री
वि	संग	इत

(5)

प्रत्यय	**शब्द**
(क) ईय	आदरणीय, शोभनीय
(ख) इन	रंगीन, शौकीन
(ग) तम	उच्चतम, श्रेष्ठतम
(घ) ई	जंगली, दीवाली
(ड) कर	पढ़कर, लड़कर
(च) ईय	गोपनीय, शासकीय

(6) पन – भोलापन, बचपन

वन – बलवान, धनवान

ता – लघुता, प्रभुता

एरा – मेरा, चेरा

पाठ 8 शब्द भंडार विलोम शब्द

(1)

आकाश – पाताल	शंति – अशंति	आदि – अनादि
जय – पराजय	पाप – पुण्य	दिन – रात
रक्षक – भक्षक	सुख – दुख	कोमल – कठोर
याचक – दाता	नरक – स्वर्ग	दोष – निंदोष

(2)

अधिक – न्यून	विष – अमृत
पाप – पुण्य	उत्तर – दक्षिण
चेतन – चड़	धर्म – अधर्म
प्रंशसा – निंदा	भक्षक – रक्षक
अनर्थ – अर्थ	शीत – ऊष्ण

(3) नीच ऊँच

शत्रु मित्र

रात दिन

जय पराजय

पाप पुण्य

व्यय अपव्यय

पर्यायवाची शब्द

(1) सही का निशान लगाइए–

(क) वन – अरण्य (ख) सिंह – राजन

(ग) इच्छा – कामना (घ) मेघ – बादल

(ड) हाथ – हस्त (च) संसार – जगत

(छ) सोना – कंचन (ज) पुत्र – तनय

(2)

वृक्ष	बादल	सूरज	सुमन	अग्नि	भवन
तरू	मेघ	सूर्य	पुष्प	आग	गृह
पेड़	जलद	दिनकर	फूल	अनल	घर

(3) (क) रात्रि निशा रजनी

(ख) नदी सरिता तटिनी

(ग) वाय पवन अनिल

(घ) मृग हिरन सारंग

(ड़) स्वर्ण सोना कंचन

(च) कपड़ा चीर वस्त्र

(छ) धरा पृथ्वी धरती

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

(1) (क) कृपा (ख) अनुमति (ग) ग्रंथ (घ) वध (ड़) अस्त्र (च) सम्राट (छ) अभिवादन (ज) पाप

(2) (क) आयु – लता जी ने बहुत छोटी आयु से ही गायकी में प्रसिद्वि पा ली थी।

अवस्था – वृद्धावस्था में लोग बच्चो जैसे हो जाते है।

(ख) प्रार्थना – मैं ईश्वर से रोज कुछ पैसे देने की प्रार्थना करता हूँ

अनुरोध – मै पिता जी से कुछ पैसे देने का अनुरोध करता हूँ।

(ग) व्यय – व्यय आय से कम होना चाहिए।

अपव्यय – किसी भी प्रकार का अपव्यय अच्छा नही है।

(घ) अमूल्य – माँ का अमूल्य होता है।

बहुमूल्य – नीरज ने अपने मित्र को एक बहुमूल्य तोहफा दिया।

(3) अमूल्य – जो कीमत देकर भी न मिल सके। सम्राट – राजाओं का राजा।

शोक – मृत्यु में होने वाला दुख। पुस्तक – कोई भी किताब।

अनेकार्थक शब्द

(1) (क) फल का नाम, सामान्य (ख) आने वाला कल , मशीन

(ग) गोद, संख्या (घ) आकाश, कपड़ा

(2) (क) हय (ख) आकाश (ग) क्षेत्र (घ) वंश (ड) शिक्षक

(3) (क) जिसका अंत नही, ईश्वर अंनत है।

बहुत से, हमारी प्रथाएँ अनंतकाल से चली आ रही है।

(ख) स्वभाव, मधु बहुत मधुर प्रकृति है।

वतावरण, प्रकृति ईश्वर का प्रतिरूप है।

(ग) एक फल, मुझे आम पसंद है।

साधारण, वह एक आम आदमी है।

(ड़) आसमान, नीले अंबर पर चाँद मुस्कुरा रहा है।

कपड़ा, कन्हैया पीले अंबर में कितने सुंदर लग रहे हैं।

(4) कर – हाथ, टैक्स पानी – जल, चमक सूत – पुत्र, धागा

बलि – बलिदान, उपहार तात – पिता, ज्येष्ठ अर्थ – मतलब, धन।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(1) (क) प्रकट (ख) वाचाल (ग) अवर्णनीय (घ) हस्तक्षेप (ड) कृतह्न

(2) (क) अकथनीय (ख) सत्यवादी (ग) रचयिता (घ) निराकार (ड) मूक (च) परिक्रमा

(3) (क) साकार, निराकार ख दृश्य, अदृश्य ग आस्तिक, नास्तिक घ दुष्कर, सुकर

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

(1) (क) घोड़ा (ख) गाय (ग) पुराना (घ) चमड़ा (ड) आकाश (च) आग (छ) गढ़ (ज) हाथ

(2) अलि – सखी अंश – हिस्सा

आदी – अभ्यस्त ओर – तरफ

नीड़ – घोंसला दशा – हाल

(3) नीड़ जलज चीता

तुरगं अनल धरा

पाठ 9 संज्ञा

(1) (क) यौवन (ख) बुढ़ापा (ग) शैशव (घ) गौरव (ड) मानवता (च) बचपन (छ) मित्रता

(ज) देवत्व (झ) शत्रुता

(2) (क) पुस्तक (ख) अच्छाई (ग) आटा

(3) (क) कवि, वकील, भाई, माता

(ख) मानवता, शत्रुता, बुढ़ापा, जातीयता

(4) (क) सही (ख) सही (ग) गलत (घ) सही (ड) सही

(5) (क) भावाचक (ख) भावाचक (ग) समूहवाचक

(घ) द्रव्यवाचक (ड) जातिवाचक (च) जातिवाचक

(छ) जातिवाचक (ज) द्रव्यवाचक (झ) व्यक्तिवाचक (ड) समूहवाचक

(6) (क) किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के नाम को नाम को संज्ञा कहते है। उदाहरण – राम, मेज, दिल्ली।

(ख) जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान, या वस्तु के गुण ,दशा, भाव या स्थिति का बोध हो उसे भावाचक संज्ञा कहते है। जैसे – मिठास, हरियाली, सुंदरता आदि।

(ग) जिस शब्द से किसी जाति की वस्तुएँ अथवा प्राणियों का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है जैसे – बच्चे, विद्यार्थी आदि। जबकि जो शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान, या वस्तु के गुण ,दशा, भाव या स्थिति का बोध हो उसे भावाचक संज्ञा कहते है। जैसे – मिठास, हरियाली, सुंदरता आदि।

(घ) संज्ञा के तीन भेद होते है–

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा – राम, मोहन

(2) जातिवाचक संज्ञा – नदी, पहाड़

(3) भाववाचक संज्ञा – मिठास, सुंदरता

(7) व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ – रामायण, भारत, आसमान, हिमालय, मराठी

जतिवाचक संज्ञाएँ – दीवार, ताज, नदी, राजा, रस

भावाचक संज्ञाएँ – लड़ाई, मानवता, तरलता, आजकल।

पाठ 10 संज्ञा – विकार लिंग

(1) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

(2) (क) गायक (ख) स्त्री (ग) मालिन (घ) बेटी (ड) कवि

(3) (क) पुल्लिंग (घ) पुल्लिंग (छ) पुल्लिंग

(ख) पुल्लिंग (ड़) स्त्रीलिंग (ज) पुल्लिंग

(ग) पुल्लिंग (च) पुल्लिंग (झ) पुल्लिंग

(4) (क) नौकरानी ने सेठ के पाँव दबाएँ।

(ख) धोबिन मम्मी को कपड़े दे गई।

(ग) चूहिया सारे फूल कुतर गई।

(घ) मै नंदन पत्रिका की नियमित पाठिका हूँ

(ड़) ठाकुराइन कल दिल्ली आने वाली है।

(च) इस गीत के रचनाकार एक कवयित्री है।

(5) (क) स्त्री एवं पुरूष जाति की पहचान कराने वाले शब्द, लिंग कहलाते है।

जैसे – दादा, दादी

(ख) स्त्री जाति की पहचान कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते है। जैसे – लड़की, गाय, घोड़ी।

पुरूष जाति की पहचान कराने वाले शब्द पुल्लिंग कहते है। जैसे – लड़का, बैल।

भाषा खेल

तिरंगा	लम्बोदर	चारपाई
तीन रंगो का समूह	लम्बा है उदर जिसका	चार पायों का समूह
दिगु समास	बहुब्रीहि	दिगु समास

लालकिला	रसोईघर	नराथम
लाल है जो किला	रसोई के लिए घर	नरो में अधम है जो
कर्मधारय	तत्पुरूष	कर्मधारय

पाठ 11 संज्ञा के विकार वचन

(1) (क) महिलाएँ (ख) लडकियाँ (ग) पिता (घ) किताबें (ड) तोते

(2) (क) डिबियाँ ख बहुएँ ग आँखे घ महिलाएँ

(3) (क) हमारी अध्यापिकाएँ अच्छा पढ़ाती है।

(ख) घोड़े दौड रहे है।

(ग) इन गमलों में पानी दो।

(घ) विद्यार्थीगण शांत बैठे है।

(4) मक्खियाँ , शहनाईयाँ , बकरियाँ

चुहियाँ, सखियाँ , नेताओ

गौएँ , गुरूओ, मजदूरो

(5) एकवचन – गिलहरी, समस्या, धेनु, नीति, महिला

ब्हुवचन – कारें, विद्यार्थीगण, चुहियाँ, मैं, टिड्डीदल

(6) छुट्टी सुई तौलिया

सड़क बहु दीया

झाड़ी गौ साँस

(7) (क) संज्ञा शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते है।

(ख) वचन दो प्रकार के होते है–(1) एकवचन जैसे – घोड़ा (2) बहुवचन जैसे – घोड़े

(ग) आँसू, प्राण , दर्शन , हस्ताक्षर।

पाठ 12 संज्ञा के विकार कारक

(1) (क) कर्ता कारक (ख) कर्म कारक (ग) संबंध कारक (घ) करण कारक (ड) संबोधन कारक

(2) (क) में (ख) से (ग) के, में (घ) हे , प्रभु

(3) (क) राम के पिता दशरथ थे।

(ख) पंतग की डोर टूट गई।

(ग) माली ने पौधे मे पानी डाला।

(घ) पेड़ से पत्ते गिर रहे है।

(4) (क) यह राम का विघालय है।

(ख) राधा ने शीला को पत्र लिखा।

(ग) पेड़ से पत्ते गिर रहे है।

(घ) राजा ने गरीबो के लिए कंबल बाँटे।

(5) (क) संबंध कारक (ख) संप्रदान (ग) कर्मकारक (घ) कर्ताकारक

(6)

कारक	**विभक्ति चिह्न**	**कारक**	**विभक्ति चिह्न**
कर्ता	ने	संप्रदान	के लिए
अपादान	से द्वारा	कर्म	को
संबोधन	हे! अरे!	अधिकरण	में पर
करण	से	संबंध	का,के, की

(7) (क) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दो, विशेष रूप से क्रिया के साथ उसका संबध जाना जाता है, वह कारक कहलाता है।

(ख) कारक के आठ भेद होते है। कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन।

(ग) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आश्रय या आधार का ज्ञान हो, उसे अधिकरण कारक कहते है। जैसे – बंदर पेड़ पर बैठा है।

पाठ 13 सर्वनाम

(1) (क) नाम के स्थान पर प्रयोग होने (ख) छः (ग) श्रोता

(2) (क) मुझे (ख) वह (ग) वैसा

(3) (क) संबंधवाचक (ख) प्रश्नवाचक (ग) निजवाचक (घ) अनिश्चवाचक (ड) अन्य पुरूषवाचक

(4) (क) किसने, किसको (ख) इसने, इसको (ग) मैने, मुझको (घ) किसी ने, किसी का

(5) (क) तुझे मेरी अध्यापिका मारेगी।

(ख) हम अपना सामान खुद उठाएँगे।

(ग) उसने खाना नही खाया।

(6) (क) मैं (ख) तुम (ग) किसने (घ) तुम्हें (ड) उसने (च) कोई (छ) वे (ज) जैसा (झ) कुछ (ढ) कौन

(7) (क) जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते है, वे सर्वनाम कहलाते है।

(ख) सर्वनाम के छः भेद होते है।

(1) पुरूषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम (3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (4) संबधवाचक सर्वनाम

(5) निजवाचक सर्वनाम (6) प्रश्नवाचक सर्वनाम

(ग) जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग स्वयं अपने लिए किया जाता है तथा वे निजत्व का बोध कराते है,उन्हे निजवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे – मैं अपने आप साइकिल चला सकता हूँ।

पाठ 14 विशेषण

(1) (क) चार (ख) क्रिया की (ग) दोनो उत्तर सही है (घ) चार (ड) उत्तरावस्था

(2) (क) गलत (ख) सही (ग) सही

(3) सोना – सुनहरा पंजाब – पंजाबी झगड़ना – झगडालू

नगर – नागरिक चिंतन – चिंता पाप – पापी

स्थान – स्थानिक स्वदेश – स्वदेशी परिचय – परिचित

जति – जातीय प्रकृति – प्रकृतिक शक्ति – शक्तिशाली

(4) सुंदर चादर

घने बादल

काले बाल

ठंडा पानी

एक पुस्तक

(5) (क) ऐतिहासिक (ख) धार्मिक (ग) ऐसा

(6) रोग – रोगी, सभी रोगी अपनी जाँच दुबारा करवाए।

राष्ट्र – राष्ट्रीय, हमारी राष्ट्रीयता भारतीय है।

खाना – खाऊ, सीमा बहुत खाऊ है।

जौ – जैसा, जैसा करोगे वैसा भरोगे।

चमक – चमकीला, सोना बहुत चमकीला होता है।

पाठ 15 किया

(1) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही (ड) गलत

(2) (क) (ब) (ख) (ब) (ग) (ब) (घ) (ब)

(3) (क) अकर्मक (ख) अकर्मक (ग) सकर्मक (घ) सकर्मक

(4) (क) देखा (ख) करो (ग) पढता (घ) आऊँगा

(5) पढ जा लिख

खा हँस सो

गना टहल ला

(6) (क) जिस शब्द से काम का होना या करना पाया जाता, उसे किया कहते है। जैसे – सीमा नृत्य दिखा रही है।

(ख) ऐसी किया जिसमें कर्म की आवश्यकता होती है, सकर्मक किया कहलाती है। इसके दो भेद होते है– एकर्मक एवं द्विकर्मक

(ग) जिन सकर्मक कियाओ के दो कर्म होते उन्हे द्विकर्मक किया कहते है। जैसे – गगन गाय को रोटी दे रहा है।

(7) मेरा नाम नमन है।

मै रोज सुबह छः बजे उठता हूँ।

मै मुहँ धोकर सैर करने जाता हूँ

करीब सात बजे वापस आता हूँ।

दाँतो पर ब्रश करता हूँ।

फिर ताजे पानी से नहाता हूँ।

उसके बाद स्कूल के लिए तैयार होता हूँ।

आठ बजे स्कूल जाता हूँ।

दो बजे स्कूल से वापस आता हूँ।

कियाएँ– उठता हूँ धोकर, जाता हूँ, आता हूँ, करता हूँ, नहाता हूँ, होता हूँ।

भाषा खेल

ऊपर से नीचे	**बाएँ से दाएँ**
1 विहग	विपट
2 पताका	2 पयोनिधि
3 निशाचर	4 आनंद
5 ईश्वर	7 साजन
6 विभावरी	8 चाह
10 नग	9 वनराज
	11 वनिता।

पाठ 16 काल

(1) (क) (ब) (ख) (ब) (ग) (ब) (घ) (ब)

(2) (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही (ड) सही

(3) (क) अंशू नाच रही थी।

(ख) वर्षा हो रही थी।

(ग) वह आया होगा।

(घ) वह आज आई होगी।

(ड) उसकी कमीज नई थी।

(4) (क) क्रिया के जिस रूप से उसके संपन्न होने के समय का ज्ञान होता है, उसे काल कहते है।

(ख) काल के तीन भेद होते है– (1) भूतकाल (2) वर्तमान काल (3) भविष्य काल

वर्तमान काल – राकेश महेश को बॉल देता है।

नेहा पत्र लिखती है।

भूतकाल – वर्षा हो रही थी।

अंशू नाच रही थी।

भविष्यत काल – नेहा पत्र लिखेगी

ललिता पढ़ेगी।

(ग) भूतकाल के छः भेद होते है–

(1) सामान्य भूतकाल – आयुष ने निबंध लिखा।

गगन मेरे घर आया।

(2) आसन्न भूतकाल – बच्चा अभी सोया है।

फलवाला आया है।

(3) पूर्ण भूतकाल – राम ने सबरी के झूठ बेल खाए थे।

भारत 1947 में आजाद हुआ था।

(4) अपूर्ण भूतकाल – रमेश पुस्तक पढ़ रहा था।

वर्षा हो रही थी।

(5) संदिग्ध भूतकाल – रमन घर आया होगा।

तुम्हें मेरा पत्र मिल गया होगा।

(6) हेतुहेतु भूतकाल – यदि तुम समय पर आए होते तो बस मिल जाती।

वर्षा होती तो फसल भी अच्छी होती।

(5) (क) मै कल विघालय गया था।

राम कल बाजार गया था।

(ख) मै स्कूल जा रहा हूँ।

राहुल पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हुँ

(ग) हम कल दिल्ली जाँएगे।

कल राम मेरे घर आएगा।

पाठ 17 अविकारी शब्द क्रियाविशेषण

(1) (क) (ब) (ख) (ब) (ग) (ब) (घ) (ब) (ड) (ब)

(2) (क) पर्याप्त – इतना दूध मेरे लिए पर्याप्त है।

(ख) लगातार – हमें लगातार परिश्रम करते रहना चाहिए।

(ग) चुपके चुपके – कुछ बच्चें परीक्षा में चुपके चुपके नकल करते है।

(घ) धड़ाधड – पाकिस्तानी टीम के धड़ाधड़ा विकेट गिर गए।

(ड़) जितना – जो जितनी मेहनत करेगा उतना ही सफल होगा।

(च) सामने – हमारे घर के सामने मंदिर है।

(3) (क) जो शब्द क्रिया के काल, स्थान, रीति आदि की विशेषताएँ बताते है, उन्हें क्रियाविशेषण कहते है। जैसे – कछुआ धीरे धीरे चलता है।

(ख) जो विशेषण की मात्रा या परिमाण के विषय में जानकारी देते है परिमाणवाचक विशेषण कहे जाते है
और जिन शब्दो से किया की मात्रा का बोध होता है परिम ाणवाचक क्रियाविशेषण कहे जाते है।

(ग) जब शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करें तो विशेषण और की विशेषताएँ बताता है तो विशेषण कहलाता है।

विशेषण	क्रियाविशेषण
उसके पास अधिक रुपये है	वह अधिक बोलता है।

(संबंध बोधक)

(1) (क) (ब) (ख) (अ) (ग) (ब) (घ) (अ)

(2) संबंधबोधक वे अविकारी शब्द है,जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध का बोध कराते है। जैसे – घर के आगे बगीचा है।

(3) (क) के नीचे (ख) अलावा (ग) से (घ) तुम्हारे सिवाय (ड) से अच्छा

(4) (क) मेरा स्कूल उत्तर की ओर है।

(ख) घर के पीछे एक बड़ा पेड़ है।

(ग) मेरा घर राम के घर से दूर है।

(समुच्चयबोधक)

(1) (क) क्योकि (ख) ताकि (ग) और (घ) परंतु

(2) जो अव्यय दो शब्दो, दो वाक्यांशो अथवा दो वाक्यों को जोड़ते है, उन्हें समुच्चय बोधक कहते है।

(3) (क) और (ख) और (ग) ताकि (घ) परंतु

(विस्मयदिबोधक)

(1) (क) शोक (ख) घृणा (ग) चेतावनी (घ) प्रशंसा

(2) जो अव्यय शब्द विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, आदि तीव्र मनोभावो को व्यक्त करते है, उन्हे विस्मयदिबोधक अव्यय कहते है। जैसे – शाबाश! तुमने कमाल कर दिया।

(3) विस्यादिबोधक शब्द मुख्यतः हर्ष, शोक ,आश्यर्च, घृणा, स्वीकृति आदि भावो को प्रकट करते है।

जैसे – हर्ष – अहा! शाबाश! , वाह वाह! , आदि शोक – हाय!, हाय हाय! , बाप रे!, आदि।

(4) (क) अरे! सरा गुड़ गोबर कर दिया।

(ख) शाबाश! तुमने कमाल कर दिया।

(ग) अरे! बलक इधर आओ।

पाठ 18 वाक्य विचार

(1) (क) आज्ञावाचक (ख) विस्मयवाचक (ग) निषेधवाचक (घ) इच्छावाचक

(2) (क) स (ख) ब (ग) ब (घ) स

(3) (क) महान संत कवि कबीर व्यवसाय से जुलाहे थे।
(ख) श्रीमती इंदिरा गाँधी, एक विदुषी स्त्री थी।
(ग) किसी बच्चे ने, यह काम किया है।
(घ) प्रधानाचार्य, ने सभा को संबोधित किया।

(4) संकेतवाचक, संदेहवाचक, सकेतवाचक, विस्मयवाचक, संकेतवाचक, आज्ञावाचक, विस्मयवाचक, संकेतवाचक

(5) (क) किरण, विद्यालय जाओ।
(ख) क्या आयुष दिल्ली जाएगा।
(ग) वाह! कितना सुंदर कंगन है।
(घ) भगवान सबका भला करें।
(ङ) तुम वहाँ जाते हो।

(6) (क) किसी निश्चित विषय को स्पष्ट करने वाले सार्थक शब्दों के समूह को जो व्यवस्थित हो वाक्य कहते हैं।

जैसे- सदा गुरुजनों का आदर करो। रविवार के दिन अवकाश रहता है।

(ख) वाक्य के दो अंग होते हैं - उद्देश्य और विधेय।

(ग) सरल वाक्य - बालक खेल रहा है।, मोर नाचता है।

मिश्रित वाक्य - मैंने एक लड़की को देखा जो बारिश में भीग रहीं थी।
जो मकान लाल रंग से बना है उसमें दो परिवार रहते हैं।

सयुक्त वाक्य - सूरज निकला और पक्षी चहचहानें लगे, मै खीर खाऊँ या सेंवई।

(घ) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं:-

(i) विधानवाचक वाक्य
(ii) निषेधवाचक वाक्य
(iii) प्रश्नवाचक वाक्य
(iv) इच्छावाचक वाक्य
(v) संदेहवाचक वाक्य
(vi) संकेतवाचक वाक्य
(vii) आज्ञावाचक वाक्य
(viii) विस्मयवाचक वाक्य

(7) मेरा परिवार एक संयुक्त परिवार है। मेरे माता-पिता के अलावा मेरे दादा-दादी और चाचा-चाची एवं उनके बच्चे भी उसमें शामिल हैं। मेरे दादा जी मुझे अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं। मेरी दादी मुझे रोचक कहानियाँ सुनाती हैं। मैं अपने चचेरे भाई-बहनों के साथ खेलता हूँ। मेरा परिवार आदर्श परिवार है।

पाठ 19 शब्द तथा वाक्य संबंधी अशुद्धिशोधन

शब्द संबंधी अशुद्धिशोधन

(1) (क) कवयित्री (ख) आदरणीय (ग) युधिष्ठिर (घ) स्वावलंबन (क) आवश्यकता

(2) (क) कृपया (ख) महत्व (ग) कृतघ्न (घ) श्रीमति (ङ) अलौकिक (च) विशेष (छ.) परीक्षा
(ज) प्रणाम (झ) प्रकाश (ञ) पक्षी (ट) उज्ज्वल (ठ) आदर्श

वाक्य संबंधी अशुद्धिशोधन

(1) (क) लिंग (ख) वचन (ग) सर्वनाम (घ) वचन (ङ) सर्वनाम

(2) (क) क्या यह सारा काम तुमने किया है। (ख) मैंने हस्ताक्षर कर दिया है।
(ग) मैंने उसे अनेक बार समझाया है। (घ) मैं अपनी पुस्तक पढ़ रहा हूँ।
(ङ) वह रविवार को आएगा। (च) तुम अपना काम करों, मैं अपना।
(छ) हम रेलगाड़ी में आए। (ज) आप चाय लेंगे या कॉफ़ी।
(झ) उसके आँसू निकल गए। (ञ) उसका थैला बहुत भारी है।

(3) (क) उसके पास बहुत पैसे हैं। (ख) हमने आपसे कहा था।
(ग) वे लोग आ गए हैं। (घ) लता खाना माँगती है।

पाठ 20 विराम चिह्न

(1)

वाक्य समाप्ति पर	पूर्ण विराम,	दो शब्द जोडने पर	योजक चिह्न
प्रश्न पूछने पर	प्रश्न चिह्न	हर्ष आदि तीव्र भावों को प्रकट करने पर	विस्मयादिबोधक
थोड़ा रूकने पर	अल्पविराम	संक्षेप में लिखने के लिए	लाघव चिह्न

(2) 1. पूर्ण विराम (।) 2. अर्ध विराम (;) 3. अल्प विराम (,)
4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) 5. विस्मयादिबोधक (!) 6. योजक चिह्न (-)
7. उद्धरण - ("...") 8. निर्देशक चिह्न (-) 9. विवरण चिह्न (:-)
10. कोष्ठक चिह्न [( )] 11. लाघव चिह्न - (◦)

(3) (क) श्रेया, नेहा और अंशु बहनें हैं। (ख) अरे! इतनी-सी जमनी क्या थोड़ी है?
(ग) दुर्योधन! रण ऐसा होगा, फिर कभी नहीं, जैसा होगा!
(घ) राम, श्याम भाई-भाई हैं।

(4) (क) विरामों (रुकना) को प्रकट करने के लिए हम जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

(ख) पूर्णविराम (।) का प्रयोग वाक्य की समाप्ति पर किया जाता है।

(ग) अल्प विराम - कम समय के लिए रुकने के लिए अल्प-विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे- अम्मा ने आम, संतरे, सेब और अनार खरीदे।
अर्ध विराम - जहाँ अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम रुकना हो, वहाँ अर्थ विराम का प्रयोग करते हैं। जैसे- खूब मेहनत करों; पास हो जाओ।

(घ) हर्ष, शोक, विस्मय, ग्लानि आदि भावों को प्रकट करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं, उनके आगे लगाए जाने वाले चिह्न को विस्मयादिबोधक चिह्न कहा जाता हैं- वाह! क्या सुंदर दृश्य है, उफ! कितनी गरमी है।

भाषा-खेल-4

1. दिनकर	2. उपग्रह	3. वीणापणि	4. भरपेट
5. नालायक	6. लड़ाकू	7. कायर	8. प्रचालित
9. डाका	10. ज्ञानवान	11. रोना	12. के साथ
13. क्योंकि	14. के साथ	15. नाग	16. भजेय

पाठ 21 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(1) (क) रफुचक्कर (ख) वीरगति को प्राप्त हुए (ग) हाथ धोना पड़ा (घ) पानी का बुलबुला है
(ङ) नाक में दम कर दिया (च) होश उड़ गए (छ) नाकों चने चबवाए (ज) नींद हराम कर दी

(2) (क) iv (ख) v (ग) vii (घ) i (ङ) ii (च) iii (छ) vi

(3) (क) मूर्खों में थोड़ा समझदार भी सम्मान पाता है– डॉक्टर बन जाने पर रमेश अपने गाँव में अंधों में काना राजा था?

(ख) परिश्रम अधिक लाभ कम – पूरी रात जागकर प्रोजेक्टर बनाया और इतने कम अंक मिला, यह तो खोदा पहाड़, निकली चुहिया वाली बात हुई।

(ग) अपना ही नुकसारन पहुँचाता है।–मेरे प्रिय मित्र सौरभ ने ही मेरे विरुद्ध बॉस के कान भरे, सही कहा है। घर का भेदी लंका ढाए।

(घ) जिस पर किसी बात का असर न हो – रोज पढ़ाने पर भी नीरज को कुछ नहीं आता वह चिकना घड़ा है।

(ङ) कम शब्द में अधिक ज्ञान–कबीर ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

(च) बर्बाद हो जाना–गलत समय बरसात होने से किसानों की सारी मेहनत मिट्टी में मिल गई।

(4) (क) चोटी का जोर (ख) मलते रह जाओगे (ग) कस लो (घ) छानता फिर रहा है।

(5) (क) स्वयं मुसीबत मोल लेना – नीरज और माथुर के झगड़े में पड़कर मैंने आ बैल मुझे मार वाली कहावत चरितार्थ की।

(ख) बल से बुद्धि बड़ी है – नन्हे राजू ने अपनी बुद्धिमता से चोर को पकड़वा दिया कहे। अक्ल बड़ी या भैंस।

(ग) अधूरा ज्ञान – चार किताब क्या पढ़ ली अमित सबको सलाह देता फिरता है ठीक कहा है अधजल गगरी छलकत जाए।

(घ) मैंने आधी कीमत पर पुरानी पुस्तकें लेकर पढ़कर उसी दाम पर बेच दी इसे कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।

(6) (क) अँगूठा दिखाना – साफ मना करना।
मैंने सुमन से अपने पैसे माँगे तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

(ख) अगर–मगर करना – टाल–मटोल करना।
दादी जी ने अमन को पढ़ने के लिए कहा तो वह अगर मगर करने लगा।

(ग) मुँह छिपाना – लज्जित होना।
ऐसा कोई काम मत करो जिससे तुम्हें दूसरों से मुँह छिपाना पड़े।

(घ) अक्ल का दुश्मन – मूर्ख।
अमन को कुछ भी समझाना व्यर्थ है, वह तो अक्ल का दुश्मन है।

(ड.) ठान लेना – पक्का निश्चय कर लेना
अमन ने सरकारी नौकरी पाने की ठान रखी है।

(7) कान भरना – चुगली करना।
अपना उल्लू सीधा करना – मतलब निकालना।
चाँद का टुकड़ा–बहुत प्यारा।
घी के दीए जलाना–खुशियाँ मनाना।

पाठ 22 अपठित गद्यांश तथा काव्यांश

(1) (क) (क) जीवन को स्वस्थ सुंदर और सक्रिय रखने के लिए मनोरंजन भी आवश्यक है। इससे बौद्धिक और मानसिक विकास होता है। पौष्टिक भोजन के ही समान स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ मनोरंजन अत्यावश्यक हैं।

(ख) सक्रिय का अर्थ हैं क्रियाशील रखना और बोध का अर्थ है ज्ञात कराना, महसूस कराना।

(ग) नाटक, सिनेमा, टेलिविजन, खेलना, घूमना आदि सभी मनोरंजन के अच्छे साधन हैं।

(घ) मनोरंजन का महत्व शीर्षक उचित हैं।

(1) (ख) (क) हर मनुष्य को अपने धर्म का पालन करना चाहिए। पिता का कर्तव्य परिवार का पालन पोषण करना है तो माता का बच्चों की सही शिक्षा देना।

(ख) शीर्षक – धर्म और कर्तव्य

(ग) पिता का कर्तव्य परिवार का पालन–पोषण करना है।

(घ) माता का कर्तव्य बच्चों को सही शिक्षा देना है।

(ङ) बच्चों का कर्तव्य दी गई शिक्षा का पालन करना है।

(च) शिक्षक का कर्तव्य बच्चों को सही ज्ञान देना है।

(2) (क) पुष्प सुरबाला के गहनों में गूँथे जाने की, किसी प्रेमी की माला में बिंधने की सम्राटों के शव पर डाले जाने की और देवों के सिर पर चढ़ने की इच्छा नहीं रखता।

(ख) पुष्प ईश्वर पर चढ़ाए जाने के स्थान पर उन वीरों के चरणों को छूना पसंद करता हैं जो अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की बलि हंसते हुए दे देते हैं।

(ग) पुष्प की अभिलाषा हैं कि उसे उस रास्ते पर डाला जाए जहाँ से वीर मातृभूमि पर न्यौछावर होने के लिए जाते हैं।

(घ) फूल गहनों में गूँथे जाने, माला में पिरोए जाने सम्राटों के शवों पर डाले जाने यहाँ तक की देवों के सिर पर डाले जाने जैसे सम्मान को नहीं पाना चाहता। वह तो उन वीरों के चरणों को स्पर्श करके धन्य होना चाहता हैं जो मातृभूमि के रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि दे देते हैं।

(ङ) इस काव्यांश का शीर्षक 'पुष्प की अभिलाषा' उचित है।

पाठ 23 अनुच्छेदन लेखन

(1)

(क) बारिश का पहला दिन

मानसून ऋतु आ गई थी और सब बारिश के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रविवार के दिन हमारी छुट्टी थी। दोपहर के समय अचानक ठंडी हवा चलने लगी और आसमान में काले बादल छा गए। मैं घर से बाहर निकल कर गली में अपने दोस्तों के साथ खेलने लगा। कुछ ही देर में बादल उमड़-घुमड़ कर बरसने लगे। हम सब मजे से बारिश में नहाने लगे और पानी में उछल-कूद मचाने लगे। मेरे कई दोस्त कागज की नाव बना लाए। हमने बहते पानी में कागज की नावें चलाई। सच में बड़ा मजा आया। बारिश थमने पर हम घर लौट गए।

(ख) मेरे प्रिय नेता

मेरे प्रिय नेता राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं। उनका जन्म 2 अक्तूबर, 1869 में हुआ। पढ़-लिखकर वे एक वकील बने। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने देखा कि अंग्रेज भरवेत लोगों पर कैसे-कैसे अत्याचार करते हैं। उन्होंने उसका विरोध किया तथा भारत लौटकर वह भारत को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष में जुट गए। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपना हथियार बनाकर कई बड़े आंदोलन चलाए। अंत में 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों को भारत को आजाद करना पड़ा। 30 जनवरी 1948 को उनकी हत्या कर दी गई।

(2)

(क) शिष्टाचार

हमारे सामाजिक जीवन में शिष्टाचार का बहुत महत्व है। मनुष्य का व्यवहार ही उसके चरित्र व स्वभाव का दर्पण होता है। हमारा शिष्ट आचरण ही हमारे लिए प्रगति के द्वार खोलता है। मनुष्य आचरण से ही पहचाना जाता है आजकल विद्यालयों में शिष्टाचार की शिक्षा पर काफी बल दिया जाता है। बड़ों का आदर व छोटों से नम्रता पूर्वक व्यवहार भी शिष्टाचार का ही अंग है। बल्कि जीवन में किसी भी क्षेत्र में हमें शिष्ट व्यवहार ही करना चाहिए जिससे हमारे मित्रों में वृद्धि हो अशिष्ट व्यवहार से तो शत्रु ही बढ़ेंगे।

(ख) मेरी अभिलाषा

लोग बड़ी-बड़ी अभिलाषाएँ रखते हैं, परंतु मेरी छोटी-सी अभिलाषा है-दुखियों की सहायता करने की। खास उन लोगों के साथ समय बिताने की जिनके साथ कोई समय बिताने वाला नहीं होता, वे बुजुर्ग जो अकेलेपन को झेलते हैं। जिनका दुर्बल शरीर काम नहीं कर पाता यहीं चाह है उनकी सेवा की जाए उन्हें आराम दिया जाए उनके बुझे चेहरे की मुस्कान मेरे दिल को राहत देती है। उनके प्यार भरे आर्शीवाद का मुकाबला पूरे जहान की दौलत नहीं कर सकती ।

(ग) मेरी माँ

किसी ने ठीक ही कहा है, माँ ही गंगा, माँ ही यमुना, माँ ही तीरथ धाम। माँ ममता की प्रतिमूर्ति होती हैं। स्वयं कष्ट उठाकर भी संतान को सुख देती है। स्वयं न खाकर उसे खिलाती हैं। रातों को जागकर संतान की देखभाल करती है। उसकी सारी बालाएँ अपने सर लेती है। अच्छे संस्कार देती है। मेरी माँ भी ऐसी ही ममता की प्रतिमूर्ति है जिन्हें पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया। माँ मैं तुम्हारे चरणों में नतमस्तक हूँ।

(घ) चिड़ियाघर

चिड़ियाघर बच्चों के लिए विस्मय से भरा स्थान होता हैं। यहाँ उन्हें विभिन्न प्रकार के जानवर व पक्षी देखने को मिलते हैं। ऐसे पशु जिन्हें वे सिर्फ कहानियों के द्वारा ही जानते हैं नजदीक से देखने को मिलते हैं। शेर चीता, भालू, हिरन, हाथी, कंगारू, चिम्पैंजी, जिराफ, गैंडा और अजगर जैसे विशालकाय पशु वे अपने सामने देख सकते हैं और पूर्ण सुरक्षित रूप में साँप जिसके नाम से ही कंपकपी हो जाती हैं उन्हे वहाँ सामने देख पाना। बंदरों को मूँगफली व केले खिलाना कितना आनंदायक होता है। बस चिड़ियाघर बड़ा होने के कारण थका अवश्य देता है।

(ङ) क्रिकेट का खेल

क्रिकेट एक बहुत ही लोकप्रिय खेल है। क्रिकेट मैच को देखने के लिए दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ती हैं। यह खेल बहुत ही रोमांचकारी होता है। टेलिविजन पर इसे देखने के लिए लोग एकत्रित होते हैं और इतने लीन हो जाते है कि खाने की सुध नहीं रहती। प्रत्येक व्यक्ति 'स्कोर' जानने को उत्सुक रहता हैं।

पहले इसके पाँच दिवसीय मैच ही होते थे परंतु अब एक दिवसीय मैच अधिक लोकप्रिय हैं, क्योंकि लोगों के पास समय का अभाव रहता है। परंतु आजकल इस मैच में एक बुराई ने घर कर लिया हैं जिसे 'मैच' फिक्सिंग के नाम से जाना जाता है। इससे खिलाड़ियों की लोकप्रियता और क्रिकेट के भविष्य पर बुरा असर पड़ सकता है। अच्छे पक्ष की ओर देखा जाए तो क्रिकेट सभी देशों में मित्रता को बढ़ावा देने वाला खेल है।

(च) मेरा विद्यालय

मेरे विद्यालय का नाम आदर्श विद्या मंदिर हैं। इसकी इमारत बहुत ही बड़ी और सुंदर है। खेलने के लिए बहुत बड़ा मैदान है छायादार पेड़ लगे हैं और प्रांगण में सुंदर फूलों के पौधे हैं।

हमारी प्रधानाध्यापिका जी बच्चों को बहुत ही प्यार करती हैं, परंतु अनुशासनहीनता उन्हें अच्छा नहीं लगता। हमारी अध्यापिकाएँ व अध्यापक महोदय बहुत ही विनम्र और कर्मठ हैं। यहाँ हमें शिष्टाचार व धर्म की भी शिक्षा दी जाती हैं। शरीर के स्वस्थ्य के लिए खेलों को महत्व दिया जाता है। शिक्षा में हमारा विद्यालय अग्रणी है। इस विद्यालय का विद्यार्थी होने पर मुझे गर्व है।

पाठ 24 कहानी लेखन

(1)

(क) अंगूर खट्टे हैं।

एक लोमड़ी सुबह से भोजन की तालाश में भटक रही थी। बहुत भटकी परंतु उसे कुछ न मिला। वह थकीं हारी लौट रहीं थी कि रास्ते में एक बाग में उसे अंगूरों के बड़े-बड़े गुच्छे नजर आए वह खुशी से झूम उठी। सोचा इतने रसीले अंगूर! अब तो जी भर कर खाऊँगी। परंतु जब निकट जाकर देखा तो अंगूरों के गुच्छे बहुत ऊँचे थे। वह बहुत देर तक उछल-उछल कर अंगूरों तक पहुँचने का प्रयत्न करती रही परंतु सफलता हाथ न लगी। दुखी होकर थक-हारकर वह लौट पड़ी और सोचने लगी छोड़ो नही खाने अंगूर बहुत खट्टे हैं। शिक्षा- जब मनुष्य अनेक प्रयत्न करके भी कुछ नहीं हासिल कर पाता तो वस्तु का ही दोष निकालता है।

(ख) एकता में बल है।

एक बार चिड़ियों का एक झुंड दाने की तलाश में निकला। एक जगह उन्हें भरपूर दाना नजर आया। उनकी मुखिया ने कहा चलो टूट पड़ो। वे सब नीचे उतरकर फूरती से दाना चुगने लगी। तभी उन्हें एहसास हुआ कि वे जाल में फस गई हैं। अब क्या करें? तभी अचानक उनकी मुखिया ने कहा-सब पूरी ताकत से मिलकर एक साथ जाल को लेकर उड़ चलो। जंगल में मेरा मित्र चूहा रहता है वह जाल को कुतरकर हमें आजाद कर देगा। सब मिलकर पूरी ताकत से जाल को ले उड़ी। जंगल में पहुँचकर चूहें के बिल के पार उतर कर शोर मचाया। चूहे ने देखा उसकी मित्र फँस गई हैं। उसने अपने सभी चूहे मित्रें को बुलाकर जाल को काट डाला और उन्हें आजाद कर दिया। इसीलिए कहते हैं एकता में बल है।

(ग) जैसे को तैसा

एक जंगल में सारस और लोमड़ी रहते थे जिनमें बहुत मित्रता थी। लोमड़ी ने एक बार सारस को अपने घर खाने का निमंत्रण दिया। सारस सरल स्वभाव का था उसने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और नियत समय पर वहाँ पहुँच गया। लोमड़ी ने सारस का स्वागत प्रेम से किया। जब वे भोजन करने लगे तो लोमड़ी ने सब्जी की तरी एक चौड़ी थाली में परोस दी। सारस की चोंच लंबी होने के कारण वह तरी पीने में असमर्थ रहा। लोमड़ी जीभ से तरी चट कर गई। सारस चुप रहकर यह परिहास सह गया और भूखा ही घर लौट गया। अब उसने लोमड़ी को अपने घर भोजन के लिए दावत दी। लोमड़ी ने भी निमंत्रण स्वीकार किया और ठीक समय वहाँ पहुँच गई। सारस ने एक लंबी गरदन वाली बोतल में उबले हुए चावल डाल दिए और खाने के लिए सामने रखी। वह अपनी लंबी चोंच से चावल खाने लगा परंतु लोमड़ी मुँह देखती ही रह गई। अपने किए का फल भोगती लोमड़ी भूखी ही घर लौट गई। इसी को कहते हैं जैसे को तैसा।

(घ) बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधेगा

एक स्थान पर कुछ चूहे रहते थे। परंतु कुछ समय से एक उनमें से एक ने आतंक फैला था। जब भी वे अपने अपने बिलों से बाहर आते अचानक कहीं से एक बिल्ली आकर उन पर झपट पड़ती और दो-चार को अपना शिकार बना लेती। चूहों ने एक बैठक की और बिल्ली से बचने का उपाय सोचने लगे। एक चूहे ने एक बेहतरीन उपाय खोज़ निकाला। उसने कहा बिल्ली के गले में एक घंटी बांध देनी चाहिए जिससे उसके आने की सूचना मिल जाए और वे सर्तक हो जाएँ। इस उपाय को सबकी स्वीकृति भी मिल गई। परंतु अब समस्या यह थी कि बिल्ली के गले में घंटी बाँधें कौन ?

(2)

(क) ईमानदार लकड़हारा

एक लकड़हारा नदी के किनारे पेड़ काट रहा था कि अचानक उसकी कुल्हाड़ी हाथ से छूटकर नदी में गिर गई कुल्हाड़ी खो देने पर वह रोने लगा उसे दुखी देख जल-देवता को उस पर तरस आ गया। वे बाहर आए और उससे पूछा 'तुम क्यों रो रहे हो' लकड़हारे ने कहा मैं गरीब आदमी अब अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करूँगा। जल देवता ने एक सोने की कुल्हाड़ी निकाल कर उससे पूछा-"यह है तुम्हारी कुल्हाड़ी" लकड़हारा ईमानदार था उसने मना कर दिया। फिर उन्होने चाँदी की कुल्हाड़ी निकाली। लकड़हारे ने उसे भी मना कर दिया अंत में जब उन्होंने लोहे की कुल्हाड़ी निकाली तब वह खुशी से उछल कर बोला-"हाँ यही है मेरी कुल्हाड़ी" जल देवता ने उसकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर तीनों कुल्हाड़ियाँ उसे दे दी।

(ख) बुद्धिमान बकरियाँ

एक नदी के दोनों किनारों पर गाँव बसे थे। नदी पर एक पतला-सा पुल बना था जो दोनों गाँवों को जोड़ता था। एक दिन दो बकरियाँ पुल पर आमने-सामने टकरा गईं। अब वे पुल कैसे पार करें। एक को तो लौटना पड़ता क्योंकि पुल इतना पतला था कि एक समय पर एक ही प्राणी उस पर चल सकता था। बकरियाँ समझदार थी वे आपस में झगड़ी नहीं। जरा देर रुककर उन्होंने सोचा और फिर एक बकरी पुल पर लेट गई। दूसरी बकरी उसके उपर से निकल कर पार हो गई। इस प्रकार बुद्धिमता और शांति से दोनों एक साथ पुल पार चली गई।

(ग) चूहा और शेर

एक बार एक शेर जंगल में शिकार के लिए निकला। कुछ देर घूमकर वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। एक चूहा उसके ऊपर उछल-उछल कर खेलने लगा। उसका इस प्रकार खेलना शेर को अच्छा लगा। उससे शेर की मित्रता हो गई। वे दोनों अक्सर वहीं मिलते व खेलते थे।

एक शिकारी ने मौका देख वहाँ जाल बिछा दिया। उस दिन शेर उस जाल में फँस गया। चूहे ने जब अपने मित्र को जाल में फँसा देखा तो झट से जाल को कुतर कर अपने मित्र को आजाद करा दिया और शिकारी देखता ही रह गया। किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए।

(3) **माँ**

एक स्त्री को संतान न होती थी इससे दु:खी हो उसने किसी और स्त्री के बच्चे को उठा लिया। वह बहुत कोशिश करने पर भी पुलिस से बच नहीं पाई और पकड़ी गई उसे न्याय के लिए राजा के दरबार में पेश किया गया दोनों स्त्रियों ने दरबार में बच्चे को अपना-अपना बताया। राजा यह जानकर आश्चर्य में पड़ गया। राजा ने फैसला दिया कि बच्चे के दो टुकड़े करके दोनों को आधा-आधा बाँट दो। बच्चे की असली माँ बिलख-बिलख कर रोने लगी और उसने कहा- "बच्चे के टुकड़े मत करो, दूसरी स्त्री को ही दे दो।" यह सुन राजा ने बच्चे की असली माँ को पहचान लिया और बच्चा चुराने के अपराध के लिए दूसरी स्त्री को दंडित किया गया।

पाठ 25 पत्र लेखन

(1) सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
तिलक नगर, नई दिल्ली,
विषय- आर्थिक सहायता के लिए आवेदन
आदरणीय महोदय,
मैं आपके विद्यालय का छठी 'अ' कक्षा का छात्र हूँ। पिछले चार वर्षों से प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण होता आया हूँ। आज एक विशेष उद्देश्य से आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। महोदय, मेरे पिता जी एक व्यापारी हैं। पिछले कुछ समय से अस्वस्थ रहने के कारण व्यापार का काम सही ढंग से न कर पाने के कारण आर्थिक स्थिति कुछ ठीक नहीं चल रही। मेरी एक छोटी बहन भी है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण पिता जी चाहते हैं कि मैं स्कूल छोड़ कर उनका हाथ बटाऊँ। परंतु मैं अभी पढ़ना चाहता हूँ। मेरी शिक्षा तभी जारी रह सकती है यदि आप मेरी सहायता करें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस वर्ष भी अच्छे अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन करूँगा।
धन्यवाद।
आपका आज्ञाकारी शिष्य
नमन
कक्षा - छठी 'अ'
अनुक्रमांक - 12
दिनांक - 11 जून 20..../.....

(2) 5032/3, संत नगर
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
26 मार्च 20.....
प्रिय मित्र मधुर,
सप्रेम नमस्कार।
कल विद्यालय से लौटने पर डाकिए द्वारा एक छोटा-सा पैकेट मिला। बाहर ही तुम्हारा नाम पढ़कर मेरे हर्ष की सीमा न रही। पैकेट खोलने पर उसमें से अपने लिए ज्ञानवर्धक पुस्तकें पाकर मैं बेहद प्रसन्न हुआ। मेरे जन्म दिवस पर इतना सुंदर उपहार जो तुमने भेजा है उसके लिए तुम्हारा किन शब्दों में धन्यवाद करूँ समझ में नही आ रहा। घर में सभी को यह उपहार पसंद आया। मेरे जन्मदिन को याद रखने व समय पर उपहार भेजने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।
तुम्हारा मित्र
निकुँज।

(3) 1/19, हौज खास
नई दिल्ली- 110016
प्रिय राहुल,
तुम्हारे पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम्हारी पढ़ाई बहुत अच्छी चल रही है। सभी विषयों में तुमने अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। हमें तुम पर गर्व है। परंतु तुम्हें अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम अत्यावश्यक हैं। तुमने सुना ही होगा स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। अत: थोड़ा समय व्यायाम के लिए भी निकालो। व्यायाम से शरीर हष्ट-पुष्ट रहता है। बीमारी आसानी से नहीं घेरती और दिनभर चुस्ती-फुरती रहती है। जीवन में चहुँमुखी विकास के लिए खेल और व्यायाम से तन, मन और मस्तिष्क का ही विकास नही होता, बल्कि जीवन संतुलित हो जाता है।
अत: मेरी सलाह यही है कि पढ़ाई के साथ-साथ व्यायाम को भी अपने जीवन का अंग बनाओ। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि तुम तरक्की करो। खुश रहो।
तुम्हारा भाई
निखिल

(4) 1/19, हौज खास
26 मई 20.....
पूजनीय माता जी,
सादर प्रणाम।

आपका पत्र प्राप्त हुआ जानकर खुशी हुई कि घर पर सब सकुशल हैं। आपको मेरे विद्यालय में हुए खेल समारोह के विषय में जानने की उत्सुकता है अत: मैं आपको उसके विषय में बता रहा हूँ।

मेरे विद्यालय में 1 सितंबर को खेल दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। इस दिन की तैयारी बहुत पहले से जोर शोर से आरंभ हो जाती है। इसमें खेलों में रूचि लेने वाले सब 400 मीटर की दौड़, लाँग जम्प, बैडमिंटन, फुटबॉल, क्रिकेट, तैराकी आदि खेलों में प्रतियोगिता हुई थी। मैंने भी क्रिकेट में भाग लिया था। इस दिन सब बच्चों में रोमांच तथा कौतुहल भरा हुआ था। एक बड़े मंच पर प्रधानाचार्य जी और अतिथिगण बैठे थे। हर स्थान पर अलग-अलग परीक्षक बैठाये गये थे। मैं खेल में विजयी रहा। सभी ने मेरी प्रशंसा की। खेल दिवस में सारा दिन चहल-पहल रही। मैंने अपना खेल पूरा होने पर अन्य प्रतियोगियों के खेलों का आनंद लिया। सबके खाने-पीने का भी बहुत अच्छा प्रबंध था। बच्चों के अभिभावकों ने भी खूब सराहना की। आप भी यहाँ होते तो कितना अच्छा लगता। पिता जी को मेरा प्रणाम। नीलू को बहुत-बहुत प्यार।

आपका पुत्र

नीलेश

(5) ई 1914, सेवा नगर,

नई दिल्ली,

दिनांक: 12 मई 20.....

प्रिय दीपक,

मेरे जन्मदिन वाले दिन ही कोरियर से एक पैकेट मिला। जिसे खोलने पर कैमरा जो कि तुमने मुझे उपहार स्वरूप भेजा है। इसके लिए मैं किन शब्दों में तुम्हारा धन्यवाद करूँ। घर में सभी को उपहार बहुत पसंद आया। मैं तो बेहद खुश हूँ इसे पाकर। तुमने मेरे जन्मदिवस को याद रखा इसके लिए धन्यवाद। इतना उपयोगी उपहार भेजने के लिए एक बार फिर से धन्यवाद। चाचा जी और चाची जी को मेरा प्रणाम कहना और चिंटू को बहुत बहुत प्यार।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

मोहित

(6) 28 बी, दयाल पार्क

जनकपुरी, नई दिल्ली।

दिनांक- 24 मई 20.....

प्रिय हिमांशु,

कल तुम्हारे चाचा जी से भेंट होने पर पता चला कि तुम आठवीं की परीक्षा में असफल हो जाने के कारण निराश व उदास हो। तुम तो बहुत हिम्मत वाले हो फिर निराश क्यों? मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पिता जी ने तुम्हें दो महीने टायफाइड से पीड़ित रहने के कारण परीक्षा देने से मना किया था। परंतु तुम हठ करके परीक्षा देने गए घर में सबने तुम्हारे उत्साह को भंग नहीं करना चाहा अत: मान गए।

चाचा जी कह रहे थे कि तुम्हारे अध्यापक व प्रधानाचार्य जी से तुम्हारे बाबू जी की बात हो गई है। उन सभी का मत है कि अगले महीने वे तुम्हारी फिर से परीक्षा लेंगे। तुम अवश्य सफल हो जाओगे मेरा विश्वास है। अब निराशा छोड़ तैयारी में जुट जाओ। मेरी शुभकामनाएँ सदा तुम्हारे साथ हैं। माँ व पिता जी को चरण वंदना तथा तुम्हें ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा मित्र

तरूण

(7) 172, नीलगिरी अलकनंदा,

नई दिल्ली।

15 मई 20.....

प्रिय स्नेहा,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी दीदी नेहा का विवाह दिनांक 25 अगस्त 20..... होना निशिचित हुआ हैं। मांगलिक कार्यक्रम 22 अगस्त से आरंभ हो जाएँगे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम इस शुभ अवसर पर आकर मेरी खुशी को दुगुना कर दो। पिता जी ने तुम्हें सपरिवार पधारने का आग्रह किया है इतना समय पहले इसलिए पत्र लिख रही हूँ कि तैयारी कर लेना व समय पर आ जाना। तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी। घर में सबको यथायोग्य अभिवादन कहना।

तुम्हारी सखी

नीहारिका

(8) ई 1914 सेवा नगर

नई दिल्ली।

दिनांक- 15 अप्रैल 20.....

प्रिय दिनेश,

सप्रेम नमस्कार।

आज ही विद्यालय में पता चला कि ग्रीष्मावकाश 10 मई से प्रारंभ होगा। पिता जी ने गरमी की छुट्टी में शिमला जाने का कार्यक्रम बना लिया है। मैं चाहता हूँ कि इस बार तुम भी हमारे साथ शिमला चलो। बड़ा आनंद आएगा। खूब मस्ती करेंगे। हम वहाँ पंद्रह दिन रूकेंगे। मेरे मामा जी वहीं रहते हैं अत: वहाँ रूकने की भी समस्या नहीं है। दिल्ली की गरमी व लू से भी बचे रहेंगे। शिमला की शांत और खूबसूरत वादियों में घूमेंगे और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेंगे। मामा जी के सरल एवं स्नेही परिवार से मिलकर तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। मुझे आशा है कि तुम हमारे साथ चलना अवश्य पसंद करोगे। मित्र, पत्र का उत्तर शीघ्र देना, ताकि तुम्हारा भी रेल आरक्षण करवाया जा सके। घर में सभी को यथायोग्य अभिवादन कहना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

रोहित।

पाठ 26 निबंध लेखन

(1)

(क) इंटरनेट की उपयोगित

इंटरनेट ने विश्व में जैसा क्रांतिकारी परिवर्तन किया वैसा किसी भी दूसरी तकनीक ने नहीं किया। इंटरनेट दूर बैठे उपभोक्ताओं के मध्य संवाद का माध्यम हैं। यह किसी भी सूचना को विश्व स्तर पर प्रकाशित करने का माध्यम हैं। आज अरबों लोग विभिन्न कार्यों के लिए इंटरनेट का प्रयोग कर रहे हैं। दुनिया के अधिकतर हिस्सों से इंटरनेट से जुड़ना संभव हैं। किसी भी देश में किसी भी कंपनी से तुरंत संपर्क हो सकता है। ई-मेल अभी तक सबसे लोकप्रिय और संचार के केंद्र में क्रांति लाने वाला उपयोग हैं। यह अन्य संचार साधानों की तुलना में सस्ता, तेज रफ्तार और सुविधाजनक माध्यम हैं।

इंटरनेट चैट व्यापक रूप से लोकप्रिय हैं। यह एक बहुउपयोगी गतिविधि है जिसके द्वारा भौगोलिक रूप से पूरे दूर दराज के स्थानों पर बैठे व्यक्ति एक ही चैट सर्वर पर लॉग करके 'की बोर्ड' की सहायता से एक दूसरे से चर्चा कर सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों ने तो दुनिया में धूम ही मचा दी है। आर्थिक गतिविधियों को संचालित करने में नेट की बढ़ती लोकप्रियता का एक प्रमाण सैंकडो की संख्या में डॉट कॉम, डॉट ऑर्ग, डॉट इंफो इत्यादि कंपनियों का उदय है।

सभी विषयों के इन्साइक्लोपीडिया सभी देशों के मानचित्र, संस्कृति इतिहास, साहित्य और जो कुछ भी हम जानना चाहते हैं उन सब की सूचना इंटरनेट से उपलब्ध है। रेल यातायात के टिकट से लेकर यातायात, विमान यातायात के टिकट से लेकर बैकिंग सुविधाओं तक सभी कुछ आज इंटरनेट के माध्यम से ही हो रहा हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं के आवेदन पत्र और रिजल्ट की भी जानकारी नेट पर उपलब्ध हैं। नेट ने मानव के सभी कार्यों को अदभुत गति प्रदान की हैं। नेट का भविष्य उज्ज्वल है।

(ख) खेलों की उपयोगिता

एक स्वस्थ दिमाग, स्वस्थ शरीर में रहता है। राष्ट्र का मतलब क्या है? क्या यह बैंकों में पड़ा सोना या वहाँ के नागरिकों का जीवन स्तर है? यह वहाँ के नागरिकों का स्वास्थ्य है।

एक व्यक्ति स्वथ्य कैसे रह सकता है? इस प्रश्न का उत्तर खेल-कूद के रूप में मिल सकता है। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के लिए खेलों का बहुत अधिक महत्व है। खेलों की इसी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए खेलों को शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया गया है।

खेल व्यक्ति को नीरोग तथा मोटा-तगड़ा तो बनाते ही हैं साथ ही उसे मानसिक तौर पर भी सशक्त बनाते हैं। खेल मानसिक रूप से स्वस्थ बनाते हुए व्यक्ति को साहसी तथा जागरूक भी बनाते हैं। आजकल क्रिकेट, फुटबॉल, टैनिस जैसे खेलों के खिलाड़ी न केवल अपने लिए अपितु अपने देश के लिए भी नाम, प्रसिद्धि और धन कमा रहे हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि खेल-कूद मनुष्य और राष्ट्र के जीवन मे महत्वपूर्ण कार्य करता है।

स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। 'पराधीन सपने हूँ सुख नाही'। पराधीन व्यक्ति स्वप्न में भी सुख का अनुभव नहीं कर पाता। हमारे देश को एक लंबे समय तक पराधीनता से मुक्त कराने के लिए अनेक वीरों ने अपना बलिदान दे दिया। उन्हीं महान वीरों का बलिदान रंग लाया और 15 अगस्त सन् 1947 के दिन भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। इसी दिन को "स्वतंत्र दिवस" के रूप में मनाया जाता है।

15 अगस्त 1949 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराया था तब से यही परंपरा चली आ रही है इस दिन सार्वजनिक अवकाश रहता है। यह राष्ट्रीय पर्व देश के कोने-कोने में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, परंतु राजधानी दिल्ली में यह विशेष उत्साह से मनाया जाता है। पूरे देश में स्थान-स्थान पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, प्रभात फेरियाँ निकाली जाती हैं और देश के महान शहीदों को श्रद्धाजंलि अर्पित की जाती है। लाल किले पर प्रतिवर्ष वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा झंडा फहाराने से रस्म शुरू होती है, फिर प्रधानमंत्री भाषण देते है और स्वतंत्र को सुरक्षित रखने का प्रण करते हैं।

स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनैतिक स्वतंत्रता ही नहीं अपितु मानसिक और सास्कृतिक स्वतंत्रता भी हैं। हमारा कर्तव्य हैं कि हम इस स्वतंत्रता को आक्षरण बनाए रखें। हम कोई ऐसा काम न करें जिससे देश के सम्मान और आत्म गौरव को ठेस पहुँचे बल्कि तन मन धन से देश की स्वतंत्रता को बनाए रखें क्योकि देश की स्वतंत्रता ही हमारी स्वतंत्रता है।

मेरा प्रिय नेता

मेरे प्रिय नेता महात्मा गांधी हैं। उन्हें राष्ट्रपिता के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 2 अक्तूबर 1869 में गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। बचपन में वह एक सामान्य विद्यार्थी थे, मगर भविष्य में एक प्रसिद्ध वकील बनें।

उन्होंने अपनी वकालत की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका में की। अफ्रीका में उन्होंने देखा कि अंग्रेज काले अफ्रीका लोगों पर बहुत अत्याचार करते थे। इसलिए उन्होनें अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई। सन् 1915 ई. में वह भारत लौटे। भारत आकर उन्होंने अपने सत्य और अहिंसा से सबको प्रभावित किया। उन्होंने हाथ से बुने कपड़ों पर जोर दिया वे अखिल भारतीय कांग्रेस के नेता बन गए। सत्य तथा अहिंसा के बल पर उन्होंने अनेक आंदोलन चलाएँ ताकि अंग्रेज भारत को छोड़कर चले जाएँ। उनके संघर्ष तथा प्रेरणा के फलस्वरूप भारत 15 अगस्त, 1947 को आजाद हो गया।

यह बड़े शर्म की बात है कि 30 जनवरी, 1948 आजादी के एक साल बाद अपने ही देश के वासी ने उनकी हत्या कर दी।

नोटबंदी

सरकार पुरानी मुद्रा को कानूनी तौर पर बंद कर देती है और नई मुद्र लाने की घोषणा करती है तो इसे नोटबंदी या विमुद्रीकरण कहते हैं। 8 नवंबर, 2016 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में 1000 तथा 500 रुपए के नोट बंद करने की घोषणा की थी।

उन्होंनें काला धन, भ्रष्टाचार, नकली नोट और आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए यह फैसला लिया था। अवैध गतिविधियों में संलग्न लोग नोटों को अपने पास ही रखते हैं। नोटबंदी से ऐसे लोगों पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

हालांकि नोटबंदी के चलते आम आदमी को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। केंद्र सरकार ने नकद लेन-देन को हतोत्साहित करने की पूरी कोशिश की। इससे पहले भारत में कई बार नोटबंदी के प्रयास किए गए थे। सन् 2005 में मनमोहन सरकार ने 500 के 2005 से पहले के नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया था।

प्रदूषण की मार

प्रदूषण का अर्थ हैं:- वातावरण या वायुमंडल का अस्वस्थ होना तथा उसके संतुलन का डगमगा जाना। विकास और व्यवस्थित जीवन के लिए जीवों को संतुलित वातावरण की आवश्कता होती हैं। जब वातावरण में हानिकारक घटकों का प्रवेश होता है तब वातावरण प्रदूषित हो जाता है जिसे प्रदूषण कहा जाता है।

प्रदूषण तीन प्रकार का होता हैं।- वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण। वायु मंडल में विशेष प्रकार की गैसें एक विशेष अनुपात में होती हैं जब यह संतुलन बिगड़ जाता है तो वायु दूषित हो जाती है। इसी प्रकार जल में जब अशुद्धियाँ मिल जाती हैं तो जल प्रदूषित हो जाता है। आजकल अधिक पैदावार के लिए जब कीटनाशकों का अधिक प्रयोग किया जाता है तो रासायनिक प्रदूषण होता है। जो हमारे स्वास्थ्य पर बहुत घातक प्रभाव डालता है। ध्वनि प्रदूषण भी एक प्रकार का प्रदूषण है जो बड़े-बड़े नगरों में कल-कारखानों के जोर आदि के कारण होता है। कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थ जल में बहाने पर जल प्रदूषित हो जाता है। भूमि पर पड़े कूड़े-कचरे के कारण भूमि-प्रदूषण होता है। आवास की समस्या को सुलझाने के लिए की जा रही वनों की कटाई भी वायु-प्रदूषण का मुख्य कारण है। प्रदूषण से श्वास, फेफड़ों संबंधी रोग, पेट तथा आँत के रोग, हैजा, पीलिया और ध्वनि-प्रदूषण से मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप, हृदय-रोग में भी वृद्धि हो रही है। यदपि प्रदूषण समस्या विश्वव्यापी है। तथापि वृक्षारोपण इसे रोकने का सर्वोत्तम उपाय है। वृक्ष हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं।

मेरा देश महान

"सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलसिता हमारा।।

भारत में विभिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं। भारत का स्वरूप जितना भव्य और विशाल है, मन उतना ही उन्नत और उदार है। मेरा भारत महान है। भारत मात्र एक शब्द नहीं हर भारतीय के दिल की आवाज है। हर हिदुंस्तानी का गौरव है, उसका सम्मान है, उसकी पहचान है। भारत एक भू-भाग का नाम नहीं अपितु उस भू-भाग में बसे लोगों, उनकी संस्कृति, उनकी सभ्यता, उनके रीति-रिवाजों, उनके अमूल्य इतिहास का नाम है। इसके उत्तर में पर्वतराज हिमालय खड़ा हैं तो दक्षिण में अथाह समुद्र है। पश्चिम में रेगिस्तान की मरूभूमि हैं तो पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। जहाँ एक ओर स्वर्ग के रूप में कश्मीर है तो दूसरी ओर सागर की सुंदरता लिए दक्षिण भारत। यहाँ अनेकों नदियाँ बहती है जो इसके स्वरूप को दिव्यता प्रदान करती है। ये नदियाँ प्रत्येक भारतीय के लिए माँ के समान पूजनीय है। भारत की सभ्यता समस्त संसार में सबसे प्राचीनतम हैं।

मेरा प्रिय त्यौहार

होली रंगो का त्यौहार है। जिसे हर धर्म के हर जाति के लोग मनाते हैं। यह हर साल फाल्गुन मास में मनाया जाता होली पर हम रंग बिरंगे रंगो से खेलते है। होली पर हम घर में बहुत सारे पकवान बनाते है। होली पर सभी के घरो में गुजिया बनाई जाती है। हर त्योहार की तरह इस त्योहार का मकसद भी धर्म, सम्प्रदा और जाति के बंधन खोलकर एकत्र होना और दुनिया भर में प्रेम का सन्देश देना है। इस दिन सभी अपने पुराने गिले शिकवे छोड़कर एक दूसरे के गले मिलकर गुलाल लगाते है।

हर साल होली के पहले दिन पूर्णिमा की रात को होलिका दहन की जाती है। होली के दिन सभी अपने घरो में पकवान बनाते है और रिश्तेदारें के घर जाकर एक दूसरे को रंग लगाते है। गुलाल कूरता प्रेम की, घंमड पर भक्ति की, अन्याय पर न्याय की जीत का प्रतीक है। इसलिए इस पर्व पर सभी रंगो से खेल कर खुशियाँ मनाते है। इस पर्व पर हमें अपने भीतर की सभी बुराई को नष्ट कर देना चाहिए।

प्रश्न पत्र 1

(1) (क) देवनागरी (ख) गुरुमुखी (ग) फ़ारसी

(2) (क) अन्न, पन्ना (ख) चक्की, मक्का (ग) समतल, भूमितल (घ) चप्पा, अप्पा (ङ) रस्सी, कस्सी, (च) चम्मच, मम्मी

(3) (क) महोत्सव (ख) सदैव (ग) स्वागत (घ) देवेन्द्र (ङ) मनज (च) सत्जन

(4) (क) दुध (ख) सच (ग) आम (घ) घी (ङ) योगी (च) समान

(5) (क) व्यक्तिवाचक (ख) व्यक्तिवाचक (ग) भाववाचक (घ) जातिवाचक (ङ) भाववाचक

(6) (क) भापना (ख) भाईचारा (ग) बचपन (घ) लड़ाई (ङ) पूजन (च) हँसी

(7) (क) गायिका (ख) नायिका (ग) गाय (घ) इंद्र (ङ) शिष्य (च) गुरुजन

(8) (क) मेज़े (ख) आँखें (ग) मछलियाँ (घ) मज़दूरों (ङ) सतरे (च) रानियाँ

(9) (क) कर्ता कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) करण कारक (घ) संप्रदान कारक

(10) (क) किसी वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते है। जैसे- मोहन, आगरा
(ख) जिन व्यक्तियों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो उन्हें निश्चवाचक सर्वनाम कहते हैं तथा जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित प्राणी, या वस्तु का बोध हो न हो उसे अनिश्चवाचक सर्वनाम कहते है।
(ग) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता का बोध कराने वाले शब्दों को विशेषण कहते है। जैसे- छोटा, मोटा, काला आदि।

प्रश्न पत्र 2

(1) (क) कि (ख) लेकिन (ग) बच्चे (घ) और

(2) (क) के पीछे (ख) के निकट (ग) के सामने (घ) के बाद

(3) (क) ललिया, कालिया (ख) व्यय, चाय (ग) कान, मान (घ)लिखावट, बनावट
(ङ) सफलता, महानता (च) समापन उद्‌पन

(4) (क) अध्या पक (ख) परि क्रम (ग) कम जोर (घ) कु कर्म (ङ) अप मान

(5) (क) वह दिन रात पढ़ता है। (ख) क्या आप अभी तक सोए नहीं?
(ग) वाह! चमत्कार हो गया। (घ) सुमन रमन और चमन बहन भाई है।

(6) (क) नींद (ख) बीमार (ग) प्यार (घ) घर

(7) (क) मूर्ख बनाना। (ख) बहुत प्यारा। (ग) जोरों की भूख लगना। (घ) चुगली करना।

(8) 112, नमन विहार,
दिल्ली
दिनांक : 20 अगस्त, 20....
मित्र विकास
कई दिनों मैं तुमकों याद कर रहा था। कल स्कूल से लौटने पर डाकिया द्‌वारा मुझे एक छोटा-सा पैकेट मिला। मित्र, बाहर ही तुम्हारा नाम व पता देखकर हर्ष की सीमा न रही। पैकेट खोलने पर उसमें से मेरी पसंदीदा घड़ी निकली जो तुमने मुझे मेरे जीवन दिवस पर उपहार दी है। मुझे यह उपहार बहुत पंसद आया। मैं किन शब्दों से तुम्हारा धन्यवाद दूँ, समझ नहीं आ रहा। मेरा जन्मदिन याद रखना, ये बताता है कि तुम मुझे कितना स्नेह करते हो।
माँ और पिता जी की तरफ से ढ़ेर-सारा प्यार व छोटी बहन की तरफ से नमस्ते। एक बार फिर उपहार के लिए धन्यवाद।
तुम्हारा मित्र,
अमित